ISWK SHARING KNOWLEDGE

Class X

Subject- Hindi Second Language

Topic-

‘समास

By – ANIL BARTARE

©ISWK

समास

समास – ’समास’ शब्द का शाब्दिक अर्थ → संक्षेप या संक्षिप्त करना है। अर्थात् दो या दो से अधिक शब्दों के मेल को समास कहते हैं।

इससे बने शब्द को सामासिक पद या समस्त पद कहते हैं ।

समस्त पद को अलग किया जाता है तो उसे समास-विग्रह कहते हैं।

जैसे →

समस्त पद	समास-विग्रह
दिन-रात	दिन और रात
रसोईघर	रसोई के लिए घर।
नीलगाय	नीले रंग की गाय।

समास के प्रकार

- 1. अव्ययीभाव समास
- 2. तत्पुरुष समास
- 3 द्विगु समास
- 4. द्वंद्व समास
- 5. कर्मधारय समास
- 6. बहुव्रीहि समास

- नोट- द्विगु और कर्मधारय समास तत्पुरुष के भेद हैं।

अव्ययीभाव समास

- → पहला पद प्रधान होता है।

  → पहला पद या पूरा पद अव्यय होता है।

  → इस समास का प्रथम पद उपसर्ग होता है।

  → यदि एक शब्द की पुनरावृत्ति हो और दोनों शब्द मिलकर अव्यय की तरह प्रयुक्त होते है।

- जैसे →
- यथाशक्ति = शक्ति के अनुसार
- निरोग = रोग से रहित
- प्रतिदिन = प्रत्येक दिन
- एक-एक = हरएक
- आमरण = मरने तक
- प्रत्यक्ष = अक्षियों के सामने

अव्ययीभाव समास के उदाहरण

- यथाशक्ति = शक्ति के अनुसार
- यथाक्रम = क्रम के अनुसार
- यथानियम = नियम के अनुसार
- प्रतिदिन = प्रत्येक दिन
- प्रतिवर्ष =हर वर्ष
- आजन्म = जन्म से लेकर
- यथासाध्य = जितना साधा जा सके
- घर-घर = प्रत्येक घर
- रातोंरात = रात ही रात में
- आमरण = मृत्यु तक
- यथास्थान = स्थान के अनुसार

निर्विवाद = बिना विवाद के
निर्विकार = बिना विकार के
प्रतिपल = हर पल
अनुकूल = मन के अनुसार
अनुरूप = रूप के अनुसार
यथासमय = समय के अनुसार
यथाशीघ्र = जितना शीघ्र हो
अकारण = बिना कारण के
यथासामर्थ्य = सामर्थ्य के अनुसार
यथाविधि = विधि के अनुसार
भरपेट = पेट भरकर
हाथोंहाथ = हाथ ही हाथ में
बेशक = शक के बिना
अभूतपूर्व = जो पहले नहीं हुआ
निर्भय = बिना भय के

तत्पुरुष समास

- तत्पुरुष समास
- (1) तत्पुरुष समास में दूसरा पद प्रधान होता है अर्थात् विभक्ति का लिंग, वचन दूसरे पद के अनुसार होता है।

  (2) तत्पुरुष समास में कारक विभक्तियों का प्रयोग होता है परन्तु ‘कर्ता’ व ‘सम्बोधन’कारक की विभक्ति इसमें नहीं आती।

- **कर्म तत्पुरुष - (को)**

- शरणागत = शरण को आगत
- परलोकगमन = परलोक को गमन
- ग्रामगत = ग्राम को गया हुआ

करण तत्पुरुष (से, के द्वारा)

तुलसीकृत = तुलसी द्वारा कृत

रेखांकित = रेखा से अंकित

हस्तलिखित = हस्त से लिखित

गुणयुक्त = गुण से युक्त

मनमाना = मन से माना

सम्प्रदान तत्पुरुष (के लिए)

गुरुदक्षिणा = गुरु के लिए दक्षिणा

युद्धभूमि = युद्ध के लिए भूमि

रसोईघर = रसोई के लिए घर

डाकगाड़ी = डाक के लिए गाड़ी

अपादान तत्पुरुष ('से')

जलजात = जल से जात (जन्म)

आशातीत = आशा से तीत (परे)

ऋणमुक्त = ऋण से मुक्त

देशनिकाला = देश से निकाला

सम्बन्ध तत्पुरुष (का, की, के)

पनघट = पानी का घाट

पनवाड़ी = पान की वाड़ी (दुकान)

राष्ट्रपति = राष्ट्र का पति

गंगाजल = गंगा का जल

विद्यालय = विद्या का आलय

अधिकरण तत्पुरुष समास (में, पर)

रेलगाड़ी = रेल पर चलने वाली गाड़ी

घुड़सवार = घोड़े पर सवार

सिरदर्द = सिर में दर्द

हरफ़नमौला = हर फ़न में मौला (निपुण)

द्विगु समास

द्विगु समास का शाब्दिक अर्थ होता है = **दो गायों का समूह**

जिस समास का पहला पद संख्यावाची होता है, उसे **द्विगु समास** कहते हैं ।

→ द्विगु समास में संख्याओं का समाहार (समूह) होता है।

→ द्विगु समास में 1 से 10, 20 ………. 100, 200 ……… 1000 तक संख्याएँ आती हैं ।

द्विगु समास के उदाहरण

पंजाब = पंच आबों का समूह

शताब्दी = शत अब्दों का समूह

नवरात्र = नौ रात्रियों का समूह

पखवाड़ा = 15 दिनों का समूह

सतसई = सात सौ दोहों का समूह

चवन्नी = चार आनों का समूह

द्विगु समास के उदाहरण

- नवग्रह = नौ ग्रहों का समूह
- दोपहर = दो पहरों का समाहार
- त्रिवेणी = तीन वेणियों का समूह
- पंचतन्त्र = पांच तंत्रों का समूह
- त्रिलोक = तीन लोकों का समाहार
- शताब्दी = सौ अब्दों का समूह
- पंसेरी = पांच सेरों का समूह
- सतसई = सात सौ दोहों का समूह
- चौगुनी = चार गुनी
- चतुर्वेद = चार वेदों का समाहार

त्रिभुज = तीन भुजाओं का समाहार

चौमासा = चार मासों का समूह

नवरात्र = नौ रात्रियों का समूह

अठन्नी = आठ आनों का समूह

सप्तर्षि = सात ऋषियों का समूह

त्रिकोण = तीन कोणों का समाहार

सप्ताह = सात दिनों का समूह

तिरंगा = तीन रंगों का समूह

द्वंद्व समास

- जिस समास के दोनों <u>पद प्रधान</u> होते हैं उसे द्वंद्व समास कहते हैं । इस समास के विग्रह में '**और**' तथा '**या**' शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

जैसे →

माता-पिता = माता और पिता

सुरासुर = सुर या असुर

शीतोष्ण = शीत या उष्ण

कृष्णार्जुन = कृष्ण और अर्जुन

द्वंद्व समास के उदाहरण

- जलवायु = जल और वायु
- अपना-पराया = अपना या पराया
- पाप-पुण्य = पाप और पुण्य
- राधा-कृष्ण = राधा और कृष्ण
- अन्न-जल = अन्न और जल
- नर-नारी = नर और नारी
- गुण-दोष = गुण और दोष
- देश-विदेश = देश और विदेश
- अमीर-गरीब = अमीर और गरीब
- नदी-नाले = नदी और नाले

आगे-पीछे = आगे और पीछे

ऊँच-नीच = ऊँच और नीच

आग-पानी = आग और पानी

मार-पीट = मार और पीट

राजा-प्रजा = राजा और प्रजा

ठंडा-गर्म = ठंडा या गर्म

दिन-रात = दिन और रात

भाई-बहन = भाई और बहन

धन-दौलत = धन और दौलत

सुख-दुःख = सुख और दुःख

कर्मधारय समास

- जिस समास का प्रथम पद विशेषण तथा दूसरा पद विशेष्य हो।
- उपमान (जिससे तुलना की जाती है) उपमेय (जिसकी तुलना की जाती है) होता है वहाँ कर्मधारय समास होता है।

  कर्मधारय समास के विग्रह में **'है जो', 'के समान है जो तथा 'रूपी'** शब्दों का प्रयोग होता है।
- जैसे → चन्द्रमुख = चन्द्रमा के समान मुख है जो

  क्रोधाग्नि = क्रोध रूपी अग्नि

कर्मधारय समास के उदाहरण

विशेषण विशेष्य	**विग्रह**
महापुरुष	महान है जो पुरुष
महात्मा	महान है जो आत्मा
श्वेतपत्र	श्वेत है जो पत्र

उपमेय-उपमान	**विग्रह**
मुखचन्द्र	चन्द्रमा रूपी मुख
भवसागर	भव रूपी सागर
क्रोधाग्नि	क्रोध रूपी अग्नि
चरणकमल	कमल के समान चरण

कर्मधारय समास के उदाहरण

- चरणकमल = कमल के समान चरण
- नीलगगन = नीला है जो गगन
- चन्द्रमुख = चन्द्र जैसा मुख
- पीताम्बर = पीत है जो अम्बर
- महात्मा = महान है जो आत्मा
- लालमणि = लाल है जो मणि
- महादेव = महान है जो देव
- देहलता = देह रूपी लता
- नवयुवक = नव है जो युवक
- श्यामसुंदर = श्याम है जो सुंदर
- नीलकंठ = नीला है जो कंठ

महापुरुष = महान है जो पुरुष

नरसिंह = नर में सिंह के समान

कनकलता = कनक की सी लता

नीलकमल = नीला है जो कमल

परमानन्द = परम है जो आनंद

सज्जन = सत् है जो जन

कमलनयन = कमल के समान नयन

अधमरा = आधा है जो मरा

प्राणप्रिय = प्राणों के समान प्रिय

बहुव्रीहि समास

- **परिभाषा** → जिस समास में पूर्वपद और उत्तरपद दोनों ही गौण हों और अन्य पद प्रधान हो और उनके शाब्दिक अर्थ को छोड़कर एक नया अर्थ निकाला जाता है, वह बहुव्रीहि समास कहलाता है।
- बहुव्रीहि समास के विग्रह में – **है जिसका, है जिसकी, जो, है जिसके, वाला, वाली शब्दों का प्रयोग** किया जाता है।

जैसे- पीताम्बर	=	पीला है अम्बर जिसका (विष्णु)
मुरलीधर	=	मुरली को धारण करने वाला (कृष्ण)

बहुव्रीहि समास के उदाहरण

गजानन = गज का है आनन जिसका (गणेश)

घनश्याम = घन जैसा श्याम है जो वह (कृष्ण)

जलज = जल में जन्मने वाला है जो वह (कमल)

दिगम्बर = दिशाएँ ही हैं जिसका अम्बर ऐसा वह (शिव)

चतुर्भुज = चार हैं भुजाएँ जिसकी (विष्णु)

बहुव्रीहि समास के उदाहरण

- दुरात्मा = बुरी आत्मा वाला (दुष्ट)
- मृत्युंजय = मृत्यु को जीतने वाला (शिव)
- निशाचर = निशा में विचरण करने वाला (राक्षस)
- गिरिधर = गिरि को धारण करने वाला (कृष्ण)
- पंकज = पंक में जो पैदा हुआ (कमल)
- त्रिलोचन = तीन हैं लोचन जिसके (शिव)
- विषधर = विष को धारण करने वाला (सर्प)

बहुव्रीहि समास के उदाहरण

त्रिनेत्र = तीन नेत्र हैं जिसके (शिव)

- नीलकंठ = नीला है कंठ जिसका (शिव)
- लम्बोदर = लम्बा है उदर जिसका (गणेश)
- दशानन = दश हैं आनन जिसके (रावण)
- चक्रधर= चक्र को धारण करने वाला (विष्णु)
- वीणापाणि = वीणा है जिसके हाथ में (सरस्वती)
- श्वेताम्बर = सफेद वस्त्रों वाली (सरस्वती)

कर्मधारय और बहुव्रीहि समास में अंतर

- **पीताम्बर** → पीत है जो अम्बर — कर्मधारय
  पीताम्बर → पीत है अम्बर जिसका वह (विष्णु) — बहुव्रीहि समास

- **चतुर्भुज** → चार भुजाएँ हैं जिसकी वह (विष्णु) — बहुव्रीहि समास
  चतुर्भुज → चार भुजाओं का समाहार — द्विगु समास

- **घनश्याम** → घन जैसा श्याम — कर्मधारय समास
- **घनश्याम** → घन जैसा श्याम है जो वह (कृष्ण) — बहुव्रीहि समास